मौत के अह़वाल और इस की तय्यारी से मुतअ़ल्लिक़ एक इ़ब्रत अंगेज़ बयान

मौत का तसव्वुर

अ़ज़ाबे क़ब्र ज़ाहिर होने की ह़िक्मत 5

तसव्वुरे मौत का त़रीक़ा 27

मलकुल मौत का ए'लान 21

दुन्या किस लिये है ? 35

मौत से पहले मौत की तय्यारी 38

पेशकश : मर्कज़ी मजलिसे शूरा

(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **दीनी** किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(المُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکربیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां **ख़राबी** हो या **सफ़ह़ात कम हों** या **बाइन्डिंग** में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

मजलिसे तराजिम (हिन्दी–गुजराती) दा'वते इस्लामी

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** की मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" ने येह रिसाला "**मौत का तसव्वुर**" उर्दू ज़बान में पेश किया है।

मजलिसे तराजिम, बरोडा (हिन्दी–गुजराती) ने इस किताब को हिन्द (INDIA) की **राष्ट्रिय भाषा "हिन्दी"** में रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** या'नी ज़बान (बोली) तो उर्दू ही है जब कि लीपि (लिखाई) हिन्दी रखी है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस किताब का **हिन्दी रस्मुल ख़त़** करते हुवे दर्जे ज़ैल मुआ़मलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है :–

﴾1﴿ कमो बेश दस(10) मराह़िल सर अन्जाम दिये गए हैं, जो येह हैं :–
(1) कम्पोज़िंग (2) सेटिंग (3) कम्पयूटर तक़ाबुल (4) तक़ाबुल बिल किताब (5) सिंगल रीडिंग (6) कम्पयूटर करेक्शन (7) करेक्शन चेकिंग (8) फ़ाइनल रीडिंग (9) फ़ाइनल करेक्शन (10) फ़ाइनल करेक्शन चेकिंग।

﴾2﴿ क़रीबुस्सौत़ (या'नी मिलती झुलती आवाज़ वाले) ह़ुरूफ़ के आपसी इमतियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़्सूस ह़ुरूफ़ के नीचे डॉट (.) लगाने का ख़ुसूसी एहतिमाम किया गया है जिस की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **तराजिम चार्ट** का बग़ौर मुत़ालआ़ फ़रमाइयें।

﴾3﴿ हिन्दी पढ़ने वालों को सह़ीह़ उर्दू तलफ़्फ़ुज़ भी हिन्दी पढ़ने ही में ह़ासिल हो जाएं इस लिये आसान मगर **अस्ल उर्दू लुग़त के तलफ़्फ़ुज़** के ऐन मुताबिक़ ही **हिन्दी–जोडणी** (spelling) रखी गई है और बत़ौरे ज़रूरत ब्रेकेट में उर्दू लफ़्ज़ हिज्जे के साथ ऐ'राब लगा कर रखा गया है। नीज़ उर्दू के मफ़्तूह़ (ज़बर वाले) ह़र्फ़ को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के अक्षर (ह़र्फ़) के पहले डेश (–) और साकिन (जज़्म वाले) ह़र्फ़ को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के अक्षर (ह़र्फ़) के नीचे खोड़ा (्) इस्ति'माल किया गया है। मषलन **उ़–लमा** (عُلَمَاء) में "**–ल**" मफ़्तूह़ और **रह़्म** (رَحْم) में "**ह़्**" साकिन है।

﴾4﴿ उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां कहीं ऐन साकिन (عْ) आता है उस की जगह पर हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (ʼ) इस्ति'माल किया गया है। जैसे : **दा'वत** (دَعْوَت)

﴾5﴿ अ़रबी–फ़ारसी मतन के साथ साथ अ़रबी किताबों के ह़वालाजात भी अ़रबी ही रखे गए हैं जब कि "عَزَّوَجَلَّ", "صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم" और "رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه" वग़ैरा को भी अ़रबी ही में रखा गया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी–बेशी** या **ग़–लती** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, e-mail या sms) **मुत्तलअ़** फ़रमा कर षवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी (रस्मुल ख़त़) का तराजिम चार्ट

त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
झ = جھ	ज = ج	ष = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ
ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ

अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق	फ़ = ف	ग़ = غ	ʼ = عْ
य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل	घ = گھ
ू = ٗ	ु = ُ	ि = ِ	– = َ	ी = ئ	ृ = وْ	ा = آ

–: राबित़ा :–

मजलिसे तराजिम, मक्तबतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर,

नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द

Mo. + 91 9327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ط

मौत का तसव्वुर(1)

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "तुम में से क़ियामत के दिन मेरे सब से ज़ियादा नज़्दीक वोह शख़्स होगा जिस ने मुझ पर कषरत से दुरूद पढ़ा होगा ।(2)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क़ब्र का ख़ौफ़नाक मन्ज़र

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सिनान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं कि एक मरतबा मैं बैतुल मुक़द्दस की पहाड़ियों में मसरूफ़े इबादत था

(1)..... मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी व निगराने मर्कज़ी मजलिसे शूरा ह़ज़रते मौलाना ह़ाजी अबू ह़ामिद मुह़म्मद इमरान अ़त्तारी مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی ने येह बयान 19 जुमादल ऊला 1429 हि. ब मुत़ाबिक़ 25 मई 2008 ई. को रंछोड़ लाईन बाबुल मदीना (कराची) में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में फ़रमाया । 2 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1434 हि. ब मुत़ाबिक़ 16 दिसम्बर 2012 ई. को ज़रूरी तरमीम व इज़ाफ़े के बा'द तह़रीरी सूरत में पेश किया जा रहा है । (शो'बए रसाइले दा'वते इस्लामी, **मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या**)

(2) ترمذی، کتاب الوتر، باب ماجاء فی فضل الصلاۃ علی النبی، ۲/ ۲۷، حدیث: ۴۸۴

कि मैं ने इन्तिहाई परेशानी के आ़लम में इधर उधर घूमते हुवे एक नौजवान को देखा। ग़मख़्वारी की निय्यत से मैं उस नौजवान के पास आया और सलाम के बा'द उस से परेशानी का सबब पूछा तो उस ने बताया : "हमारा एक पड़ोसी अपने भाई की मौत पर इस क़दर ग़म में मुब्तला है कि हर लम्हा आहो ज़ारी ही करता रहता है और उसे किसी करवट चैन नहीं। मेहरबानी फ़रमा कर आप मेरे साथ चलिये ताकि उस से ता'ज़ियत कर के उसे तसल्ली दें, शायद कि आप के दिल जोई फ़रमाने से उसे क़रार आ जाए।" चुनान्चे, मैं ने चलने पर आमादगी ज़ाहिर की तो वोह नौजवान मुझे साथ ले कर ग़म से निढ़ाल एक शख़्स के पास पहुंचा, हम ने उस से ता'ज़ियत की मगर उस ने कोई तवज्जोह न दी बल्कि आहो ज़ारी करने लगा तो हम ने उसे समझाते हुवे कहा : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! इस त़रह़ बे सब्री का मुज़ाहरा न कर, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डर और सब्र से काम ले, बेशक मौत हर किसी को आनी है। जिस ने भी ज़िन्दगी का सफ़र शुरूअ़ किया उस की मन्ज़िल व इन्तिहा मौत है, मौत एक ऐसा पुल है जिस से हर एक ने गुज़रना है, कुछ गुज़र गए, कुछ गुज़र रहे हैं और कुछ को अभी अपनी बारी पर गुज़रना है।"

याद रख ! हर आन आख़िर मौत है बन तू मत अन्जान आख़िर मौत है
मुल्के फ़ानी में फ़ना हर शै को है सुन लगा कर कान, आख़िर मौत है
बारहा इ़ल्मी तुझे समझा चुके मान या मत मान, आख़िर मौत है

हमारी बातें सुन कर वोह शख़्स कुछ यूं गोया हुवा : "मेरे भाइयो ! तुम ने बिल्कुल ठीक कहा, तुम्हारी बातें बरहक़ हैं, मौत वाक़ेई हर किसी को आनी है और हर एक को अपने वक़्ते मुक़र्ररा पर इस दुन्याए फ़ानी से जाना है, मगर मेरी आहो ज़ारी का सबब भाई की मौत नहीं बल्कि येह है कि मेरा भाई क़ब्र में बहुत बड़ी मुसीबत का शिकार है।" उस की बात सुन कर हम ने कहा : "سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ क्या तुम ग़ैब जानते हो जो तुम्हें मा'लूम हो गया कि तुम्हारा भाई क़ब्र में अ़ज़ाब से दो-चार है?" तो वोह कहने लगा : "नहीं ! मैं ग़ैब तो नहीं जानता मगर जो हौलनाक मन्ज़र मैं ने अपनी आंखों से देखा है वोह मुझे किसी करवट चैन नहीं लेने देता।" हमारे इस्रार पर आख़िरेकार उस ने अपना वाक़िआ़ कुछ यूं सुनाया : जब मेरे भाई का इन्तिक़ाल हुवा और तजहीज़ व तकफ़ीन के बा'द हम ने उसे क़ब्रिस्तान में दफ़्न कर दिया तो लोग वापस आ गए मगर मैं कुछ देर क़ब्र के पास ही खड़ा रहा। अचानक मैं ने एक दर्दनाक आवाज़ सुनी, गोया कि कोई इन्तिहाई तक्लीफ़ के आ़लम में "बचाओ ! बचाओ !" की सदाएं दे रहा था, मैं ने इधर उधर देखा मगर कोई नज़र न आया तो ग़ौर से सुनने लगा कि आख़िर येह आवाज़ किस की है और कहां से आ रही है? मा'लूम हुवा कि येह पुरदर्द आवाज़ तो मेरे भाई की है जो क़ब्र के अन्दर से आ रही है। मैं बेचैन हो कर क़ब्र खोदने लगा तो एक ग़ैबी आवाज़ ने मुझे चोंका दिया, कोई कहने वाला कह रहा था : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे !

क़ब्र मत खोद, येह **अल्लाह** के राज़ों में से एक राज़ है इसे पोशीदा ही रहने दे।" आवाज़ सुन कर मैं डर गया और क़ब्र खोदने से बाज़ आ गया, जब वहां से उठ कर जाने लगा तो मैं ने फिर अपने भाई की दर्दनाक आवाज़ सुनी जो बड़े कर्ब से "बचाओ ! बचाओ !" पुकार रहा था। मुझे अपने भाई पर तरस आने लगा और मैं ने दोबारा क़ब्र खोदना शुरूअ़ कर दी, अभी मैं ने थोड़ी सी मिट्टी हटाई थी कि फिर मुझे ग़ैबी आवाज़ सुनाई दी : "**अल्लाह** के राज़ों को न खोल और क़ब्र खोदने से बाज़ रह।" ग़ैबी आवाज़ सुन कर मैं ने दोबारा क़ब्र खोदना बन्द कर दी और वहां से जाने लगा तो इस बार मेरे भाई ने जिस कर्ब से मुझे पुकारा तो मुझ से रहा न गया बल्कि उस पर रह़्म आया और मैं ने पुख़्ता इरादा कर लिया कि अब तो ज़रूर क़ब्र खोदूंगा। चुनान्चे, मैं ने क़ब्र खोदना शुरूअ़ की जैसे ही मैं ने क़ब्र से सिल हटाई तो क़ब्र का अन्दरूनी मन्ज़र देख कर मेरे होश उड़ गए, अन्दर इन्तिहाई **ख़ौफ़नाक मन्ज़र** था, अभी अभी हम ने जिस भाई को दफ़्न किया था उस का सारा जिस्म न सिर्फ़ आग की ज़न्जीरों में जकड़ा हुवा था बल्कि क़ब्र गोया कि जहन्नम की आग से भरी हुई थी। अपने भाई को इस ह़ालत में देख कर मुझ से रहा न गया और उसे ज़न्जीरों से आज़ाद कराने के लिये मैं ने बड़ी बे ताबी से अपना हाथ उस की गर्दन में बन्धी हुई ज़न्जीरों की त़रफ़ बढ़ाया, जैसे ही मेरा हाथ ज़न्जीर को लगा मेरे हाथ की उंगलियां

गोया कि गर्म लोहे की त़रह़ पिघल कर हाथ से जुदा हो गई। तक्लीफ़ की शिद्दत से मेरी चीख़ें निकल गईं और मैं हातिफ़े ग़ैबी के मन्अ़ करने के बा वुजूद भाई की क़ब्र खोलने पर अफ़्सोस करने लगा, फिर जैसे मुमकिन हुवा मैं ने क़ब्र को बन्द किया और वहां से भाग निकला। देखना चाहते हो तो येह देखो ! मेरे हाथ की उंगलियां। इतना कहने के बा'द उस ने चादर से अपना हाथ निकाला तो वाक़ेई उस की चार उंगलियां ग़ाइब थीं और हाथ पर जख़्म का अ़जीबो ग़रीब निशान मौजूद था।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सिनान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं कि येह देख कर हम ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से आ़फ़िय्यत त़लब की और वहां से चले आए।[1]

अ़ज़ाबे क़ब्र ज़ाहिर होने की ह़िक्मत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सिनान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं कि जब मैं ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा तो उन्हें येह सारा वाक़िआ़ सुना कर पूछा : हुज़ूर ! जब कोई यहूदी या नस्रानी मरता है तो उस का अ़ज़ाबे क़ब्र लोगों पर ज़ाहिर नहीं होता मगर मुसलमानों की क़ब्रों के ह़ालात बा'ज़ मरतबा ज़ाहिर हो जाते हैं इस की क्या वजह है ? तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने

مدینہ

[1] عیون الحکایات، الحکایۃ الرابعۃ والخمسون بعد المائۃ، حکایۃ رجل یعذب فی قبرہ، ص ۱۷۱

इरशाद फ़रमाया : कुफ़्फ़ार के अ़ज़ाबे क़ब्र में तो किसी मुसलमान को शक ही नहीं, उन्हें तो दाइमी अ़ज़ाब का सामना करना ही है। सब मुसलमान यक़ीन रखते हैं कि कुफ़्फ़ार मरते ही अ़ज़ाब में मुब्तला हो जाते हैं इस लिये इन के अ़ज़ाब को ज़ाहिर नहीं किया जाता। हां ! बा'ज़ मरतबा गुनाहगार मुसलमानों की क़ब्रों का ह़ाल लोगों पर ज़ाहिर कर दिया जाता है ताकि लोग इ़ब्रत पकड़ें और गुनाहों से ताइब हो कर अपने पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा वाले आ'माल की त़रफ़ रागि़ब हों।[1]

इ़ब्रत के मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत में हमारे लिये इ़ब्रत के कई मदनी फूल पोशीदा हैं।

۞ इस में कोई शक नहीं कि जिस का ख़ातिमा कुफ़्र पर हुवा वोह मरते ही दाइमी अ़ज़ाब का शिकार हो जाता है कि जिस से नजात की कोई राह नहीं।

۞ बा'ज़ अवक़ात गुनाहगार मुसलमानों के अ़ज़ाबे क़ब्र के वाक़िआ़त को ज़ाहिर कर दिया जाता है ताकि दीगर मुसलमान इ़ब्रत ह़ासिल करें और इस ख़ूश फ़ेहमी में न रहें कि हम तो ईमान ला चुके हैं लिहाज़ा हम अ़ज़ाबे कब्र से महफ़ूज़ रहेंगे।

[1] عیون الحکایات، الحکایۃ الرابعۃ والخمسون بعد المائۃ، حکایۃ رجل یعذب فی قبرہ، ص۱۷۱

۞ येह बात भी पेशे नज़र रखना चाहिये कि अगर बे बाकी से ज़िन्दगी गुज़ारते रहे और तौबा किये बिग़ैर गुनाहों का पलन्दा लिये क़ब्र में उतर गए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नाराज़ हो गया, उस के ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रूठ गए तो अ़ज़ाबे क़ब्र का सामना हो सकता है।

۞ अ़ज़ाबे क़ब्र की सख़्ती और हौलनाकी का अन्दाज़ा इस बात से लगा सकते हैं कि उस शख़्स के भाई को कुछ ही देर में आग की ज़न्जीरों में जकड़ लिया गया और जब उस ने अपने भाई को बचाने के लिये अपना हाथ बढ़ाया तो उस की उंगलियां हाथ से जुदा हो गईं।

۞ क़ब्र जहन्नम के गढ़ों में से एक गढ़ा हो सकता है। जैसा कि ह़दीषे पाक में है कि "क़ब्र जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है या जहन्नम के गढ़ों में से एक गढ़ा।"[1]

मेरा दिल कांप उठता है कलेजा मुंह को आता है
करम या रब अन्धेरा क़ब्र का जब याद आता है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़ब्र की पुकार

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! हम अपने हाथों से मुर्दों को क़ब्र में उतारते हैं लेकिन हमें इस बात का एह़सास नहीं होता कि एक

[1] ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، ۲۶ باب (ت: ۹۱)، ۴/ ۲۰۸، حدیث: ۲۴۶۸

दिन हमें भी अन्धेरी क़ब्र में उतरना और अपनी करनी का फल भुगतना पड़ेगा। हम क़ब्र को भूलें चाहे याद रखें क़ब्र हमें नहीं भूलती। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना फ़क़ीह अबुल्लैष समरक़न्दी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं कि क़ब्र रोज़ाना 5 मरतबा येह निदा करती है :

۞ ऐ आदमी ! तू मेरी पीठ पर चलता है ह़ालांकि मेरा पेट तेरा ठिकाना है।

۞ ऐ आदमी ! तू मुझ पर उ़म्दा उ़म्दा खाने खाता है अ़नक़रीब मेरे पेट में तुझे कीड़े खाएंगे।

۞ ऐ आदमी ! तू मेरी पीठ पर हंसता है जल्द ही मेरे अन्दर आ कर रोएगा।

۞ ऐ आदमी ! तू मेरी पीठ पर ख़ुशियां मनाता है अ़नक़रीब मुझ में ग़मगीन होगा।

۞ ऐ आदमी ! तू मेरी पीठ पर गुनाह करता है अ़नक़रीब मेरे पेट में मुब्तलाए अ़ज़ाब होगा।[1]

क़ब्र रोज़ाना येह करती है पुकार मुझ में हैं कीड़े मकोड़े बे शुमार
याद रख ! मैं हूं अन्धेरी कोठड़ी तुझ को होगी मुझ में सुन वह़शत बड़ी
मेरे अन्दर तू अकेला आएगा
हां मगर आ'माल लेता आएगा

تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہِ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

مدینہ

[1] تنبیہ الغافلین، باب عذاب القبر وشدتہ، ص۲۳

क़ब्र सांपों से भर गई

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल ह़मीद बिन महमूद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَدُوْد कहते हैं : मैं ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के पास बैठा था कि कुछ लोगों ने ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : हम ह़ज के इरादे से आ रहे थे कि रास्ते में हमारा एक साथी फ़ौत हो गया, हम ने उस की तजहीज़ व तक्फ़ीन का बन्दोबस्त कर के क़ब्र खोदी तो वोह सांपों से भर गई। हम ने उस जगह को छोड़ कर दूसरी जगह क़ब्र खोदी तो वहां भी ऐसा ही हुवा, इसी त़रह़ तीसरी जगह भी येही वाक़िआ़ हुवा, लिहाज़ा हम उसे वहीं छोड़ कर आप से मश्वरा लेने ह़ाज़िर हुवे हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि "येह उस के आ'माल (का बदला) हैं, जाओ और उसे उसी (सांपों से भरी क़ब्र) में दफ़्न कर दो। उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! अगर तुम पूरी ज़मीन भी खोद डालोगे तो हर जगह उन ही सांपों को पाओगे।" लिहाज़ा उन्हों ने जा कर उसे सांपों के साथ ही दफ़्न कर दिया। फिर वापसी पर जब उस का सामान देने के लिये उस के घर गए तो उस की बीवी से पूछा कि "वोह क्या काम किया करता था ?" तो उस की बीवी ने जवाब दिया : "वोह गन्दुम बेचा करता था और रोज़ाना उस में से अपने घर वालों के लिये खाने की मिक़्दार के बराबर गन्दुम निकाल कर इतनी मिक़्दार में रद्दी गन्दुम उस में डाल देता था।"[1]

[1] موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب القبور، جامع ذکر القبور، ۶/ ۸۳، حدیث: ۱۲۸

हुस्ने ज़ाहिर पर अगर तू जाएगा आ़लमे फ़ानी से धोका खाएगा
येह मुनक़्क़श सांप है डस जाएगा रह न ग़ाफ़िल याद रख पछताएगा

एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुसलमान और काफ़िर की मौत के अह़वाल

ह़ज़रते सय्यिदुना बरा बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि हम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ एक अन्सारी के जनाज़े में गए, क़ब्र पर पहुंचे तो वोह अभी तय्यार न थी, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बैठ गए, हम भी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आस पास ऐसे बैठ गए गोया हमारे सरों पर परन्दे हैं, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते अक़्दस में एक छड़ी थी जिस से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ज़मीन कुरैदने लगे, फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना सर उठाया और दो या तीन बार फ़रमाया : "अ़ज़ाबे क़ब्र से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगो ।" फिर फ़रमाया : बन्दए मोमिन जब दुन्या से रवाना हो कर आख़िरत की त़रफ़ जाने लगता है तो उस पर आस्मान से सफ़ेद चेहरे वाले फ़िरिश्ते उतरते हैं, गोया उन के चेहरे सूरज हैं, उन के साथ जन्नती कफ़न और जन्नती ख़ुश्बू होती है यहां तक कि मय्यित के पास ता ह़द्दे निगाह बैठ जाते हैं, फिर **मलकुल मौत** عَلَیْہِ السَّلَام आते हैं और उस के सर के पास बैठ कर

कहते हैं : "ऐ पाक रूह ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बख़्शिश और रिज़ा की त़रफ़ चल।" तो वोह इस त़रह़ (जिस्म से) निकलती है जिस त़रह़ पानी की मशक से कोई क़त़रा टपक कर निकलता है और **मलकुल मौत** عَلَيْهِ السَّلَام उसे क़ब्ज़ कर लेते हैं। **मलकुल मौत** عَلَيْهِ السَّلَام जूंही उस रूह़ को क़ब्ज़ करते हैं तो वहां मौजूद दीगर फ़िरिश्ते पल भर इन्तिज़ार नहीं करते और उस नेक रूह़ को **मलकुल मौत** عَلَيْهِ السَّلَام से ले कर जन्नती कफ़न पहना देते हैं फिर उसे जन्नती ख़ुश्बू लगाते हैं तो उस से रूए ज़मीन पर पाई जाने वाली बेहतरीन मुश्क से भी बढ़ कर नफ़ीस ख़ुश्बू आने लगती है। फिर वोह फ़िरिश्ते उस रूह़ को ले कर (आस्मान की त़रफ़) चढ़ते हैं तो फ़िरिश्तों की जिस जमाअ़त के पास से गुज़रते हैं वोह पूछते हैं : "येह ख़ुश्बूओं में बसी पाक रूह़ किस की है?" तो फ़िरिश्ते कहते हैं कि येह फ़ुलां बिन फ़ुलां है। वोह इस रूह़ का तआ़रुफ़ ऐसे मुअ़ज़्ज़ज़ व मोह़तरम नाम से कराते हैं जिस से लोग दुन्या में उसे पुकारा करते थे, यहां तक कि वोह उसे ले कर आस्माने दुन्या तक पहुंच जाते हैं, फिर उस के लिये आस्मान के दरवाज़े खोलने की इजाज़त त़लब की जाती है तो दरवाज़े खोल दिये जाते हैं, इस के बा'द हर आस्मान के फ़िरिश्ते उसे अगले आस्मान पर पहुंचाते हैं ह़त्ता कि उसे सातवें आस्मान तक पहुंचा देते हैं।

तो **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : "मेरे बन्दे के नामए आ'माल को मक़ामे इल्लीय्यीन[1] (पाने वालों) में लिख दो और इसे ज़मीन की त़रफ़ लौटा दो क्यूंकि मैं ने अपने बन्दों को इसी से पैदा किया है, इसी में उन्हें लौटाऊंगा और इसी से उन्हें दोबारा निकालूंगा।" हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मज़ीद फ़रमाया : उस की रूह़ उस के जिस्म में लौटा दी जाती है, फिर उस के पास दो फ़िरिश्ते आ कर उसे बिठाते हैं और उस से पूछते हैं कि तेरा रब हौन है ? वोह कहता है : मेरा रब **अल्लाह** है। वोह पूछते हैं : तेरा दीन क्या है ? वोह कहता है : मेरा दीन इस्लाम है। वोह पूछते हैं : येह साहिब कौन हैं जो तुम में भेजे गए ? वोह कहता है कि येह **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं। वोह पूछते हैं : तुझे कैसे मा'लूम हुवा ? वोह कहता है : मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की किताब पढ़ी, उस पर ईमान लाया और उस की तस्दीक़ की। तो आस्मान से पुकारने वाला पुकारता है कि "मेरे बन्दे ने सच कहा। इस के लिये जन्नत का बिस्तर बिछाओ, इसे जन्नती लिबास पहनाओ और इस के लिये जन्नत की त़रफ़ दरवाज़ा खोल दो।" पस उसे जन्नत की ख़ुशगवार हवा और ख़ुश्बू आने लगती है और उस की क़ब्र ता ह़द्दे निगाह फ़राख़ कर दी जाती है। फिर उस के पास एक ख़ूब सूरत चेहरे,

---

1 ..... इल्लिय्यीन सातवें आस्मान में ज़ेरे अ़र्श (एक मक़ाम का नाम) है।

(خزائن العرفان، پ۳۰، المطففین، تحت الآیۃ ۱۸)

अच्छे कपड़ों और पाकीज़ा तरीन ख़ुश्बू वाला शख़्स आता है और कहता है : तुझे ख़ुश ख़बरी हो उस चीज़ की जो तुझे मसरूर करेगी। येह तेरा वोह दिन है जिस का तुझ से वा'दा किया गया था। येह पूछता है : तू कौन है? तेरा चेहरा भलाई की ख़बर देता है। वोह कहता है : मैं तेरा नेक अ़मल हूं। बन्दा कहता है : ऐ मेरे रब ! क़ियामत क़ाइम कर ताकि मैं अपने घरबार और माल में पहुंचूं। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मज़ीद फ़रमाया कि बन्दए काफ़िर जब दुन्या से रवाना हो कर आख़िरत की त़रफ़ जाने लगता है तो उस की त़रफ़ आस्मान से सियाह चेहरे वाले फ़िरिश्ते उतरते हैं जिन के पास टाट होते हैं। वोह फ़िरिश्ते उस के पास ता ह़द्दे निगाह बैठ जाते हैं फिर **मलकुल मौत** عَلَيْهِ السَّلَام आ कर उस के सर के पास बैठते हैं और कहते हैं : "ऐ ख़बीष रूह़ ! **अल्लाह** की नाराज़ी और ग़ज़ब की त़रफ़ निकल।" तो वोह रूह़ जिस्म में छुपती फिरती है, **मलकुल मौत** عَلَيْهِ السَّلَام उसे ऐसे ख़ींचते हैं जैसे गर्म सीख़ भीगी ऊन से खींची जाती है। जब उसे क़ब्ज़ कर लेते हैं तो वोह फ़िरिश्ते उसे **मलकुल मौत** عَلَيْهِ السَّلَام के हाथ में पलक झपकने की मिक़्दार भी नहीं रहने देते और उसे ले कर उन टाटों में डाल लेते हैं, उस से रूए ज़मीन के बदतरीन मुर्दार की सी बद बू निकलती है, जब वोह उसे ले कर (आस्मान की त़रफ़) चढ़ते है तो फ़िरिश्तों की जिस जमाअ़त की त़रफ़ से गुज़रते हैं वोह पूछते हैं कि येह ख़बीष रूह़ किस की है? तो फ़िरिश्ते उस का दुन्यावी बद तरीन नाम ले कर

कहते हैं कि येह फुलां बिन फुलां है। यहां तक कि उसे ले कर आस्माने दुन्या तक आते हैं और उस का दरवाज़ा खोलने की इजाज़त त़लब करते हैं मगर वोह उस के लिये नहीं खोला जाता। फिर दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबारका पढ़ी :

لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ اَبْوَابُ السَّمَآءِ وَلَا يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ حَتّٰى يَلِجَ الْجَمَلُ فِيْ سَمِّ الْخِيَاطِ ؕ

(پ۸، الاعراف:۴۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उन के लिये आस्मान के दरवाज़े न खोले जाएंगे और न वोह जन्नत में दाख़िल हों जब तक सूई के नाके ऊंट न दाख़िल हो।*

फिर रब तआ़ला फ़िरिश्तों से फ़रमाता है : "इस का नामए आ'माल निचली ज़मीन में मक़ामे सिज्जीन[1] (वालों) में लिख दो।" तो उस की रूह़ फेंक दी जाती है। फिर दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बिइज़्ने परवर दगार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

وَ مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَكَاَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ اَوْ تَهْوِيْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ مَكَانٍ سَحِيْقٍ ﴿۳۱﴾ (پ۱۷، الحج:۳۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो* ***अल्लाह*** *का शरीक करे वोह गोया गिरा आस्मान से कि परन्दे उसे उचक ले जाते हैं या हवा उसे किसी दूर जगह फेंकती है।*

---

1 ..... सिज्जीन सातवीं ज़मीन के अस्फ़ल में एक मक़ाम है जो इब्लीस और उस के लश्करों का महल है। (خزائن العرفان، پ۳۰، المطففین، تحت الآیۃ ۷)

फिर रूह जिस्म में लौटाई जाती है और उस के पास दो फ़िरिश्ते आ कर उसे बिठाते हैं और पूछते हैं : तेरा रब कौन है ? वोह कहता है : हाए ! हाए ! मैं नहीं जानता। फिर पूछते हैं : तेरा दीन क्या है ? वोह कहता है : हाए ! हाए ! मैं नहीं जानता। फिर पूछते हैं : येह कौन साहिब हैं जो तुम में भेजे गए ? वोह कहता है : हाए ! हाए ! मैं नहीं जानता। तब आस्मान से पुकारने वाला पुकारता है : येह झूटा है इस के लिये आग का बिस्तर बिछाओ और आग की तरफ़ दरवाज़ा खोल दो। चुनान्चे, उस तक दोज़ख़ की गर्मी और वहां की लू आने लगती है और उस पर क़ब्र इस क़दर तंग कर दी जाती है कि उस की पस्लियां इधर उधर (या'नी एक दूसरे में पैवस्त) हो जाती हैं और उस के पास एक बद शक्ल, बुरे लिबास वाला बदबूदार आदमी आता है और उस से कहता है : तुझे ख़ुश ख़बरी हो उस चीज़ की जो तुझे ग़मगीन करेगी, येही वोह दिन है जिस का तुझ से वा'दा किया गया था। मुर्दा कहता है कि तू कौन है कि तेरा चेहरा शर (बुराई) की ख़बर दे रहा है ? वोह कहता है : मैं तेरा बुरा अ़मल हूं। तब येह कहता है : इलाही क़ियामत क़ाइम न करना।[1]

अ़ज़ाबे क़ब्र हक़ है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़रा ग़ौर कीजिये कि एक मोमिन नेकूकार और एक काफ़िर बदकार की मौत, क़ब्र, रूह निकलने,

[1] مسند احمد، مسند الکوفیین، حدیث البراء بن عازب، ٦/ ٤١٣، حدیث: ١٨٥٥٩

रूह़ आस्मान तक जाने और नज़्अ़ की सख़्तियों के अह़वाल में किस क़दर फ़र्क़ है। याद रखिये ! अ़ज़ाबे क़ब्र ह़क़ है। चुनान्चे,

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़्रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़ज़ाबे क़ब्र के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हां ! अ़ज़ाबे क़ब्र ह़क़ है।" उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बयान फ़रमाती हैं कि इस के बा'द मैं ने देखा कि मेरे सरताज, साहिबे मे'राज صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हर नमाज़ के बा'द अ़ज़ाबे क़ब्र से पनाह मांगा करते थे।(1) नीज़ बुख़ारी शरीफ़ की एक ह़दीषे पाक में वोह दुआ़ भी मज़्कूर है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह दुआ़ किया करते थे :

اَللّٰھُمَّ اِنِّی اَعُوذُ بِکَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ عَذَابِ النَّارِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَّال۔

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं अ़ज़ाबे क़ब्र, अ़ज़ाबे दोज़ख़, ज़िन्दगी और मौत के फ़ितनों और मसीह़ दज्जाल के फ़ितनों से तेरी पनाह चाहता हूं।(2)

مدینہ

1 بخاری، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی عذاب القبر، ۱ / ۴۶۳، حدیث: ۱۳۷۲

2 بخاری، کتاب الجنائز، باب التعوذ من عذاب القبر، ۱ / ۴۶۴، حدیث: ۱۳۷۷

ह़दीष की शर्ह़

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत, मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : येह तमाम दुआ़एं उम्मत की ता'लीम के लिये हैं, वरना अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام अ़ज़ाबे क़ब्र तो क्या ह़िसाबे क़ब्र से भी मह़फ़ूज़ हैं। इसी त़रह़ जो इन के दामन में आ जाए वोह ज़िन्दगी और मौत के फ़ितनों से मह़फ़ूज़ हो जाता है। आप के नाम की बरकत से लोगों को दज्जाल के फ़ितनों से अमान मिलेगी। जहां कहीं हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया कि मैं फ़ुलां चीज़ से तेरी पनाह मांगता हूं वहां उम्मत के लिये पनाह मुराद है।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़रा ग़ौर कीजिये कि हमारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुद तो हर क़िस्म की मा'सिय्यत से मह़फ़ूज़ हैं मगर फिर भी हम गुनाहगारों के लिये अ़ज़ाबे क़ब्र और मुख़्तलिफ़ फ़ितनों से पनाह मांग रहे हैं और एक हम हैं कि दिन रात गुनाहों में मश्ग़ूल रहने के बा वुजूद हमें मौत की सख़्तियों का ख़ौफ़ है न अ़ज़ाबे क़ब्र का डर है बल्कि हम दिन ब दिन गुनाहों के मुआ़मले में बे बाक होते जा रहे हैं। याद रहे !

आगाह अपनी मौत से कोई बशर नहीं
सामान सो बरस का है पल की ख़बर नहीं

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1 ..... मिरआतुल मनाजीह़, 2/110

हमारा क्या बनेगा ?

शराब पीने वालों, बदकारी करने वालों, जूआ खेलने वालों, बद फे'ली करने वालों, बद निगाही करने वालों, गाने बाजे सुनने वालों, फ़िल्मे डिरामे देखने वालों, छुप छुप कर गुनाह करने वालों, दाढ़ी मुंडाने वालों, मां-बाप को सताने वालों, मिलावट वाला माल धोके से बेचने वालो, बिला इजाज़ते शरई रमज़ान के रोज़े क़ज़ा करने वालों, झूट बोलने वालों, रिश्वत लेने वालों, लोगों के मोबाइल फ़ोन चोरी करने वालों, डकैती मारने वालों, पाक दामन औरतों पर तोहमत लगाने वालों, बद गुमानियां करने वालों, मुसलमानों की इज़्ज़त से खेलने वालों और मुसलमानों की दिल आज़ारी का सबब बनने वालों के लिये मक़ामे ग़ौर है कि अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों से रूगर्दानी के सबब कहीं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रुठ गए, गुनाहों की नुहूसत के सबब कहीं ईमान बरबाद हो गया और इसी ह़ालत में मौत आ गई तो हमारा क्या बनेगा ?

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ❁ अगर हमारी क़ब्र में जहन्नम की आग भड़का दी गई ❁ अगर हमारी ज़बान पर येह जारी हो गया

: "هَيْهاتَ هَيْهاتَ لااَدْرى" अफ़्सोस ! मैं कुछ नहीं जानता ۞ अगर हमारी क़ब्र दोनों त़रफ़ से मिल कर हमें दबाने लगी ۞ अगर हमारी पस्लियां टूट कर एक दूसरे में पैवस्त हो गईं तो हम क्या करेंगे ? ۞ हमारी क़ब्र में सांप बिच्छू आ गए तो कहां जाएंगे ? ۞ हमें आग की ज़न्जीरों में जकड़ लिया गया तो हमारा क्या बनेगा ? ۞ हमारे कफ़न को आग के कफ़न से बदल दिया गया तो हमारा क्या ह़ाल होगा ? ۞ उस वक़्त कहां जाएंगे ? किस को पुकारेंगे ?

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तो नाराज़ कर चुके अब कौन है जो क़ब्र की हौलनाकियों से बचाएगा ?

आ'माल का सिलसिला भी मुन्क़त़अ़ हो चुका कि क़ब्र आ'माल की जगह नहीं, अ़मल के लिये जो ज़िन्दगी मिली थी उसे तो ग़फ़्लत की नज़्र कर दिया, हाए अफ़्सोस ! हम ने अपनी दुन्यवी ज़िन्दगी ग़फ़्लत और त़रह़ त़रह़ के गुनाहों और फ़ुज़ूलियात में बरबाद कर दी।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

➲ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम सब पर रह़्म फ़रमाए।

➲ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम सब को गुनाहों की आ़दत से नजात अ़त़ा फ़रमाए।

➲ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम सब को नमाज़ी बना दे।

➲ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम सब को गुनाहों से बचने वाला बना दे।

➲ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम सब पर नज़्अ़ की सख़्तियां आसान कर दे।

➲ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम सब का ईमान सलामत रखे।

➲ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम को तौबा की तौफ़ीक़ दे दे।

➲ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारी क़ब्र को जन्नत का बाग़ बना दे।

➲ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब पर अपनी रह़मत का मींह बरसा दे।

➲ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें लम्ह़ा भर भी कुफ़्र की ज़िन्दगी में मुब्तला न फ़रमाए।

➲ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें आ़फ़िय्यत, आ़फ़िय्यत और आ़फ़िय्यत ही अ़त़ा फ़रमाए।

अभी हमारे पास वक़्त है, हमारी सांसें अभी बाक़ी हैं, इस से पहले कि मौत का फ़िरिश्ता आ कर हमारा रिश्तए ह़यात मुन्क़त़अ़ कर दे फ़ौरन से पेश्तर अपने तमाम गुनाहों से तौबा कर लीजिये। हमारे अस्लाफ़ क़ब्र की हौलनाकियों, वह़शतों, तन्हाइयों और अन्धेरियों से बहुत ज़ियादा ख़ौफ़ज़दा रहा करते थे और एक हम हैं कि अपनी क़ब्र को यक्सर भूले हुवे हैं, रोज़ बरोज़ लोगों के जनाज़े उठते देखने के बा वुजूद येह नहीं सोचते कि एक दिन हमारा जनाज़ा भी उठ जाएगा, यक़ीनन येह जनाज़े हमारे लिये ख़ामोश मुबल्लिग़ की ह़ैषिय्यत रखते हैं। जो कुछ वोह ज़बाने ह़ाल से कह रहे होते हैं उस की तर्जुमानी किसी ने क्या ख़ूब की है :

जनाज़ा आगे आगे कह रहा है ऐ जहां वालो

मेरे पीछे चले आओ तुम्हारा रहनुमा मैं हूं

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

येह इ़ब्रत की जा है

हमारे कितने ही दोस्त, अह़बाब, अ़ज़ीज़, रिश्तेदार देखते ही देखते अचानक मौत का शिकार हो कर क़ब्रों में पहुंच गए और हम उन के जनाजें में शरीक भी हुवे लेकिन न जाने हमारी आंखों पर ग़फ़्लत का कैसा दबीज़ (मोटा) पर्दा पड़ा हुवा है कि हमें येह एह़सास ही नहीं होता कि एक दिन हमें भी इसी त़रह़ मौत का शिकार होना और अन्धेरी क़ब्र में उतरना पड़ेगा।

जब इस बज़्म से उठ गए दोस्त अकषर

और उठते चले जा रहे हैं बराबर

येह हर वक़्त पेशे नज़र जब है मन्ज़र

यहां पर तेरा दिल बहलता है क्यूंकर

जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है

येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मलकुल मौत का ए'लान

मन्क़ूल है कि रोज़ाना मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام क़ब्रिस्तान में येह ए'लान करते हैं : ऐ अहले कुबूर ! तुम्हें दुन्या में मौजूद किन

लोगों पर रश्क आता है ? तो वोह जवाब देते हैं : "हमें रश्क है उन लोगों पर जो ۞ बारगाहे ख़ुदावन्दी में हाज़िर हो कर सजदा रेज़ होते हैं और हम नहीं हो सकते ۞ जो रोज़े रखते हैं और हम नहीं रख सकते ۞ जो सदक़ा करते हैं और हम नहीं कर सकते ۞ जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र की महफ़िलें सजाते हैं और हम ऐसा नहीं कर सकते ।"[1]

हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي नक़्ल करते हैं : बनी इस्राईल का एक मग़रूर आदमी अपने बन्द कमरे में घर वालों में से किसी के साथ तन्हाई में था कि इतने में एक शख़्स उस की तरफ़ एक दम लपका । उस मग़रूर ने कहा : अन्दर दाख़िले की तुम्हें किस ने इजाज़त दी और तुम हो कौन ? नौवारिद ने कहा : मुझे इस घर के मालिक ने इजाज़त दी और मैं वोह हूं जिसे कोई दरबान नहीं रोक सकता, मुझे बादशाहों से भी इजाज़त लेने की ज़रूरत नहीं होती, न मुझे किसी का दबदबा डरा सकता है, न ही मुझ से कोई मग़रूर व सरकश बच सकता है । येह सुन कर वोह मग़रूर आदमी ख़ौफ़ से थर्राता हुवा मुंह के बल गिर पड़ा, फिर इन्तिहाई ज़िल्लत के साथ मुंह उठा कर बोला : आप मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام मा'लूम होते हैं ! फ़रमाया : हां मैं मलकुल मौत हूं । उस ने अ़र्ज़ की : क्या मुझे मोहलत मिल सकती है ताकि तौबा कर के नेकियों का अ़हद करूं ?

[1] الروض الفائق، المجلس الثالث فی ذکر الموت وزیارۃ القبور.....الخ، ص ۲۷

फ़रमाया : नहीं, तुम्हारे सांस पूरे हो चुके हैं। बोला : मुझे कहां ले जाएंगे ? फ़रमाया : उस मक़ाम पर जहां तू ने आ'माल भेजे हैं और उस घर की त़रफ़ जो तू ने तय्यार किया है। बोला : अफ़्सोस ! मैं ने न कोई नेकी आगे भेजी है न ही कोई अच्छा घर तय्यार किया है। मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : फिर तो तुझे उस भड़कती आग की त़रफ़ ले जाया जाएगा जो तेरा गोश्त पोस्त नोच लेगी। येह कह कर मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने उस की रूह़ क़ब्ज़ कर ली और वोह मुर्दा हो कर गिर पड़ा। घर में कोहराम पड़ गया, चीख़ो पुकार और रोना धोना मच गया। इस वाक़िए के रावी ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद रक़्क़ाशी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : अगर उन सोगवारों को उस के बुरे अन्जाम का पता चल जाता तो इस से भी ज़ियादा रोना धोना मचाते।(1)

याद रख हर आन आख़िर मौत है
बन तू मत अन्जान आख़िर मौत है
एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

इ़ब्रतनाक अश्आ़र

नम्बर (1)

وَقَفْتُ عَلَى الْاَحِبَّةِ حِيْنَ صَفَّتْ　　قُبُوْرُهُمْ كَاَفْرَاسِ الرِّهَانِ
فَلَمَّا اَنْ بَكَيْتُ وَفَاضَ دَمْعِىْ　　رَاَتْ عَيْنَاىَ بَيْنَهُمْ مَكَانِىْ

(1) اِحیاءُ العلوم، کتاب ذکر الموت ومابعدہ، الباب الثالث فی سکرات الموت وشدتہ......الخ، ۵/ ۲۱۶

या'नी (1) मैं दोस्तों के पास रुका, उन की क़ब्रें दौड़ लगाने वाले घोड़ों की त़रह सफ़ बस्ता थीं

(2) पस जब मैं रोया और मेरे आंसू बहने लगे तो मेरी आंखों ने उन के दरमियान मेरा मकान देख लिया।(1)

नम्बर (2)

يَا اَيُّهَا النَّاسُ كَانَ لِىْ اَمَلٌ   قَصَرَ بِىْ عَنْ بُلُوْغِهِ الْاَجَل
فَلْيَتقِ اللّٰهَ رَبَّهُ رَجُلٌ   اَمْكَنَه فِىْ حِيَاتِهِ الْعَمَل
مَا اَنَا وَحُدِىْ نُقِلْتُ حَيْثُ تَرَى   كُلّ اِلٰى مِثْلِه سيُنْتَقَل

या'नी (1) ऐ लोगो ! मेरी बहुत सी उम्मीदें (Wishes) थीं मगर मौत ने मुझे उन तक पहुंचने की मोहलत न दी

(2) पस उस शख़्स को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरना चाहिये जो दुन्यावी ज़िन्दगी में नेक आ'माल कर सकता है

(3) सिर्फ़ मुझे ही यहां नहीं रखा गया बल्कि तू देखेगा कि जिधर मुझे भेजा गया हर एक उधर ही मुन्तक़िल होगा।(2)

नम्बर (3)

اَلَا قَلَّ لِمَاشٍ عَلٰى قَبْرِنَا   غُفُولٌ لِاَشْيَاءٍ حُلَّتْ بِنَا
سَيَنْدَمُ يَوْمًا لِتَفْرِيْطِهٖ   كَمَا قَدْ نَدِمْنَا لِتَفْرِيْطِنَا

या'नी (1) ख़बरदार ! हमारी क़ब्र के पास से गुज़रने वाले के लिये कम मुद्दत है, वोह उन चीज़ों से बहुत ज़ियादा ग़ाफ़िल है जो हमें पहनाई गई हैं।

---

(1) اِحیاءُ العلوم، کتاب ذکر الموت ومابعدہ، الباب السادس فی اقاویل العارفین علی الجنائز......الخ، ۵/ ۲۴۰

(2) المرجع السابق

(2) अ़नक़रीब एक दिन वोह अपनी ग़फ़्लत की वजह से शर्मसार होगा जैसा कि हम अपनी ग़फ़्लत की वजह से शर्मिन्दा हुवे ।[1]

नम्बर (4)

قِفْ وَاعْتَبِرْ فَقَرِيْبًا تَحِلُّ هٰذَا الْمَحَلَّا

هٰذَا مَكَانٌ يُسَاوِى فِيْهِ الْاَعَزُّ الْاَذَلَّا

या'नी (1) (ऐ गुज़रने वाले !) ज़रा ठहरजा ! और इ़ब्रत ह़ासिल कर, अ़नक़रीब तुझे भी इस मकान में उतरना है (2) येह ऐसा मकान है जिस में इ़ज़्ज़त व ज़िल्लत वाले सब बराबर हैं ।[2]

नम्बर (5)

بِاللّٰهِ يَاقَبْرُ هَلْ زَالَتْ مَحَاسِنُه وَهَلْ تَغَيَّرَ ذَاكَ الْمَنْظَرُ النَّضْرُ

يَاقَبْرُ مَا اَنْتِ لَا رَوْضٌ وَلَا فَلَكٌ فَكَيْفَ يَجْمَعُ فِيْكِ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ

या'नी (1) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ऐ क़ब्र ! क्या उस के ख़ूब सूरत आ'ज़ा बरबाद हो गए ? और क्या उस का पुर कशिश और तरोताज़ा (चेहरा) तब्दील हो गया ?

(2) ऐ क़ब्र ! तू क्या है ? तू बाग़ है, न आस्मान, फिर कैसे तुझ में चांद सूरज (जैसे लोग) जम्अ़ हो जाते हैं ।[3]

---

1 الروض الفائق، المجلس الثالث فی ذکر الموت وزیارۃ القبور.....الخ، ص ۲۶

2 المرجع السابق 3 المرجع السابق

नम्बर (6)

اُدْنُ مِنِّیْ أُنْبِیکَ عَنِّیْ وَلَا یُنْـ بِیْکَ عَنِّیْ یَا صَاحِ مِثْلَ خَبِیْرِ

اَنَا مَیِّتٌ کَمَا تَرَانِیْ طَرِیْحٌ بَیْنَ اَطْبَاقِ جُنْدَلِ وَ صَخُوْرِ

اَنَا فِیْ بَیْتِ غُرْبَةٍ وَ اِنْفِرَادٍ مَعْ قُرْبِیْ مِنْ جِیْرَتِیْ وَعَشِیْرِی

لَیْسَ لِیْ فِیْهِ مُؤْنِسٌ غَیْرَ سَعْیِ مِنْ صَلَاحٍ سَعَیْتُه اَوْ فُجُورِ

فَکَذَا اَنْتَ فَاعْتَبِرْ بِیْ وَاِلَّا صِرْتَ مِثْلِیْ رَہِیْنٌ یَوْمَ النُّشُوْرِ

या'नी (1) ऐ उमूरे आख़िरत से ग़ाफ़िल हो कर इन क़ब्रों के दरमियान चलने वाले ! (2) मेरे क़रीब आ ! मैं तुझे अपने हालात से बा ख़बर करूं, कि मुझ से बेहतर अपने हालात की ख़बर तुझे कोई नहीं बताएगा (3) मैं मुर्दा हूं जैसा कि तू देख रहा है कि मुझे बन्जर और चटयल मैदान में डाल दिया गया है (4) अपने पड़ोसियों और घर वालों के बा वुजूद मैं इस वीरान घर में अकेला हूं (5) नेकियों और गुनाहों के इलावा क़ब्र में मेरे साथ कोई नहीं (6) इसी त़रह़ तुझे भी यौमे क़ियामत के लिये यहां गिर्वी रखा जाएगा लिहाज़ा मुझ से इ़ब्रत ह़ासिल कर, वरना तेरा भी मेरे जैसा ह़ाल होगा।[1]

आबादी किधर है ?

मन्क़ूल है कि शाम के वक़्त एक घुड़ सुवार मुसाफ़िर एक वादी में दाख़िल हुवा तो शाम के साए गहरे होते देख कर उस ने सोचा कि रात की तारीकी छाने से क़ब्ल कोई मह़फ़ूज़ ठिकाना

1 الروض الفائق، المجلس الثالث فی ذکر الموت وزیارۃ القبور......الخ، ص ۲۶

तलाश करना चाहिये । चुनान्चे, उसे वादी में एक लड़का नज़र आया तो उस ने लड़के से पूछा कि आबादी किधर है ? लड़के ने अ़र्ज़ की : उस पहाड़ी पर चढ़ कर देखेंगे तो दूसरी त़रफ़ आप को आबादी ही आबादी नज़र आएगी । जब उस शख़्स ने पहाड़ी पर चढ़ कर दूसरी त़रफ़ देखा तो उसे आबादी के बजाए एक क़ब्रिस्तान दिखाई दिया जिस में हर त़रफ़ बरबादी व वीरानी ही के आषार नुमायां थे । वोह दिल में कहने लगा : यक़ीनन येह लड़का बे वुक़ूफ़ है जो आने जाने वाले अन्जान मुसाफ़िरों को परेशान करता है या फिर इन्तिहाई अ़क़्ल मन्द है और इस के क़ब्रिस्तान की त़रफ़ इशारा करने में कोई ह़िक्मत पोशीदा है । येह सोच कर वोह ह़क़ीक़ते ह़ाल जानने के लिये वापस आया और उस लड़के से पूछा : मैं ने आबादी के मुतअ़ल्लिक़ पूछा था मगर तुम ने मुझे क़ब्रिस्तान का रास्ता क्यूं दिखाया ? तो लड़के ने बसद एह़तिराम कहा : जनाब ! मैं ने घाटी के इस त़रफ़ के कषीर लोगों को उस त़रफ़ जाते तो देखा है लेकिन उधर वालों को कभी भी इस त़रफ़ आते नहीं देखा लिहाज़ा मेरे ख़याल में तो आबादी उधर है न कि इधर । हां ! अगर आप मुझ से पूछते कि मुझे और मेरे जानवर को ठिकाना कहां मिल सकता है तो मैं आप को इधर भेजता न कि उधर ।[1]

तसव्वुरे मौत का त़रीक़ा

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमारी दुन्यावी और उख़रवी ज़िन्दगी के दरमियान मौत की घाटी ह़ाइल है, जिस दिन हम ने येह घाटी उ़बूर

[1] الروض الفائق، المجلس الثالث فی ذکر الموت وزیارۃ القبور.....الخ، ص ۲۷

कर ली कभी वापसी न होगी। लिहाज़ा मौत की इस पुर ख़तर घाटी को याद रखिये कि जिसे हर एक ने पार करना है और कभी भी ग़फ़्लत इख़्तियार न कीजिये। चुनान्चे,

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ **480** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बयानाते अ़त्तारिय्या हिस्सए अव्वल** सफ़ह़ा **304** पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मौत को हमेशा याद रखने के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कामयाब व अ़क़्लमन्द वोही है जो दूसरों को मरता देख कर अपनी मौत याद करे और क़ब्रो आख़िरत की तय्यारी कर ले। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मन्क़ूल है : اَلسَّعِيْدُ مَنْ وُعِظَ بِغَيْرِهٖ या'नी सआ़दत मन्द वोह है जो दूसरों से नसीह़त ह़ासिल करे।[1]

याद रखिये ! ग़फ़्लत के साथ मौत को याद करने से येह सआ़दत ह़ासिल नहीं होगी कि इस त़रह़ तो इन्सान हमेशा जनाज़े देखता ही रहता है और कभी अपने हाथों से भी उन्हें क़ब्र में उतारता है। तसव्वुरे मौत का बेहतर त़रीक़ा येह है कि कभी कभी तन्हाई में दिल को हर त़रह़ के दुन्यावी ख़यालात से पाक कर के फिर पहले अपने उन दोस्तों और रिश्तेदारों को याद कीजिये जो वफ़ात पा चुके

[1] مسلم، کتاب القدر، باب کیفیۃ الخلق الآدمی.....الخ، ص ۱۴۲۱، حدیث: ۲۶۴۵

हैं, अपने क़ुर्बो जवार में रहने वाले फ़ौत शुदगान में से एक एक को याद कीजिये और तसव्वुर ही तसव्वुर में उन के चेहरे सामने लाइये और ख़याल कीजिये कि वोह किस त़रह़ दुन्या में अपने अपने मन्सब व काम में मश्ग़ूल, लम्बी लम्बी उम्मीदें बांधे, दुन्यावी ता'लीम के ज़रीए मुस्तक़बिल की बेहतरी के लिये कोशां थे और ऐसे कामों की तदबीर में लगे थे जो शायद सालहा साल तक मुकम्मल न हो सकें , दुन्यावी कारोबार के लिये वोह त़रह़ त़रह़ की तक्लीफ़ें और मशक़्क़तें बरदाश्त किया करते थे वोह सिर्फ़ इस दुन्या ही के लिये कोशिशों में मसरूफ़ थे, इसी की आसाइशें उन्हें मह़बूब और इसी का आराम उन्हें मरग़ूब था, वोह यूं ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे गोया उन्हें कभी मरना ही नहीं । चुनान्चे, वोह मौत से ग़ाफ़िल ख़ुशियों में बद मस्त और खेल तमाशों में मगन थे, उन के कफ़न बाज़ार में आ चुके थे लेकिन वोह इस से बे ख़बर दुन्या की रंगीनियों में गुम थे, आह ! इसी बे ख़बरी के आ़लम में उन्हें यकायक मौत ने आ लिया और वोह क़ब्रों में पहुंचा दिये गए, उन के मां–बाप ग़म से निढ़ाल हो गए, उन की बेवाएं बे ह़ाल हो गईं, उन के बच्चे बिलकते रह गए, मुस्तक़बिल के ह़सीन ख़्वाबों का आईना चकना चूर हो गया, उम्मीदें मल्या मेट हो गईं, उन के काम अधूरे रह गए, दुन्या के लिये उन की सब मेह़नतें राईगां गईं, वुरषा उन के अम्वाल तक़्सीम कर के मज़े से खा रहे हैं और उन को भूल चुके हैं । इस तसव्वुर के बा'द अब उन की क़ब्र के ह़ालात के बारे में भी ग़ौर

कीजिये कि उन के बदन कैसे गल सड़ गए होंगे, आह ! उन के ह़सीन चेहरे कैसे मस्ख़ हो गए होंगे, वोह खिलखिला कर हंसते थे तो मुंह से फूल झड़ते थे मगर आह ! अब उन के वोह चमकीले ख़ूब सूरत दांत झड़ चुके होंगे और मुंह में पीप पड़ गई होगी, उन की मोटी मोटी दिलकश आंखें उबल कर रुख़्सारों पर बह गई होंगी, उन के रेशम जैसे बाल झड़ कर क़ब्र में बिखर गए होंगे, उन की बारीक ऊंची ख़ूब सूरत नाक में कीड़े घुसे हुवे होंगे, उन के गुलाब की पंखड़ियों की मानिन्द पतले पतले नाज़ुक होंटों को कीड़े खा रहे होंगे, वोह नन्हे नन्हे बच्चे जिन की तुतली बातों से ग़मज़दा दिल खिल उठते थे मरने के बा'द उन की ज़बानों पर कीड़े चिमटे होंगे, नौजवानों के क़ाबिले रश्क तुवाना वर्ज़िशी जिस्म ख़ाक में मिल गए होंगे। उन के तमाम जोड़ अलग अलग हो चुके होंगे।

येह तसव्वुर करने के बा'द येह सोचिये कि आह ! येह ह़ाल अ़नक़रीब मेरा भी होने वाला है, मुझ पर भी नज़्अ़ की कैफ़िय्यत त़ारी होगी, आंखें छत पर लगी होंगी, अ़ज़ीज़ो अक़ारिब जम्अ़ होंगे, मां : मेरा लाल ! मेरा लाल ! कह रही होगी, बाप मुझे : बेटा ! बेटा ! कह कर पुकार रहा होगा, बहनें : भाई ! भाई ! की आवाज़ें लगा रही होंगी, चाहने वाले आहें और सिस्कियां भर रहे होंगे, फिर इसी चीख़ो पुकार के पुरहौल माह़ोल में रूह़ क़ब्ज़ कर ली जाएगी, कोई

आगे बढ़ कर मेरी आंखें बन्द कर देगा, मुझ पर कपड़ा ओढ़ा दिया जाएगा, अ़ज़ीज़ों के रोने धोने से कोहराम मच जाएगा, फिर ग़स्साल को बुलाया जाएगा, मुझे तख़्ताए ग़ुस्ल पर लिटा कर ग़ुस्ल दिया जाएगा और कफ़न पहनाया जाएगा, आहो फ़ुग़ां के शोर में उस घर से मेरा जनाज़ा रवाना होगा जिस घर में मैं ने सारी उ़म्र बसर की, कल तक जिन्हों ने नाज़ उठाए आज वोही मेरा जनाज़ा उठा कर क़ब्रिस्तान की त़रफ़ चल पड़ेंगे, फिर मुझे क़ब्र में उतार कर मेरे अ़ज़ीज़ अपने हाथों से मुझ पर मिट्टी डालेंगे, आह ! फिर क़ब्र की तारीकियों में मुझे तन्हा छोड़ कर सब के सब वापस पलट जाएंगे। मेरा दिल बहलाने के लिये कोई भी वहां न ठहरेगा, हाए ! हाए ! फिर क़ब्र में मेरा जिस्म गलना सड़ना शुरूअ़ हो जाएगा। इसे कीड़े खाना शुरूअ़ कर देंगे, वोह कीड़े पता नहीं मेरी सीधी आंख पहले खाएंगे या कि उलटी आंख, मेरी ज़बान पहले खाएंगे या मेरे होंट। हाए ! हाए ! मेरे बदन पर किस क़दर आज़ादी के साथ कीड़े रैंग रहे होंगे, नाक, कान और आंखों वग़ैरा में घुस रहे होंगे।

यूं अपनी मौत और क़ब्र के ह़ालात का बारी बारी तसव्वुर बांधिये फिर मुन्कर नकीर की आमद, उन के सुवालात और अ़ज़ाबे क़ब्र का ख़याल दिल में लाइये और अपने आप को इन

पेश आने वाले मुआ़मलात से डराइये। इस त़रह़ फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ मौत का तसव्वुर करने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दिल में मौत का एह़सास पैदा होगा, नेकियां करने और गुनाहों से बचने का ज़ेह्न बनेगा।[1]

हमारे अस्लाफ़ और मौत का तसव्वुर

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! हमारे बुजुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن हर वक़्त मौत और क़ब्र व आख़िरत को पेशे नज़र रखते। येही वजह है कि वोह गुनाहों से दूर और नेकियों पर कमर बस्ता रहते और दुन्या की आ़रिज़ी लज़्ज़तों में मसरूफ़ हो कर मुत़मइन हो जाने के बजाए हर वक़्त ख़ौफ़े ख़ुदा से रोते हुवे मौत, क़ब्र और ह़श्र व नश्र की हौलनाकियों को याद रखते थे। चुनान्चे,

आख़िरत की पहली मन्ज़िल

मन्क़ूल है, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब किसी क़ब्र के क़रीब खड़े होते तो इस क़दर रोते कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दाढ़ी मुबारक तर हो जाती। इस बारे में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इस्तिफ़सार किया गया कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जन्नत व दोज़ख़ के तज़किरे पर नहीं रोते मगर जब किसी क़ब्र के क़रीब खड़े होते हैं तो इस क़दर गिर्या व ज़ारी फ़रमाते हैं, इस का क्या सबब है? ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि दो जहां के

[1] بیانات عطاریہ، حصہ ۱، ص ۳۰۵ تا ۳۰۹

ताजवर, सुल्ताने बहूरो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : बेशक क़ब्र आख़िरत की सब से पहली मन्ज़िल है। अगर इस से नजात पाई तो बा'द का मुआ़मला इस से आसान होगा और अगर इस से नजात न पाई तो बा'द का मुआ़मला इस से ज़ियादा सख़्त होगा।(1)

उस का ह़ाल क्या होगा !

ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद रक़्क़ाशी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الشَّافِي फ़रमाते हैं : "मौत जिस का मौइद (या'नी वा'दे का वक़्त) हो, क़ब्र जिस का घर हो, ज़मीन के नीचे जिस का ठिकाना हो, कीड़े जिस के अनीस (या'नी साथी) हों और इस के साथ साथ उसे اَلْفَزَعُ الْاَكْبَر (बड़ी घबराहट या'नी क़ियामत) का भी इन्तिज़ार हो, उस का ह़ाल क्या होगा।" येह फ़रमा कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه पर रिक़्क़त त़ारी हो जाती यहां तक कि रोते रोते बेहोश हो जाते।(2)

मौत को मत भूलना पछताओगे क़ब्र में ऐ आ़सियो ! जब जाओगे
सांप बिच्छू देख कर घबराओगे भाग न हरगिज़ वहां से पाओगे

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

مدینہ

1 ترمذی، کتاب الزھد، ۵ باب (ت:۵)، ۴/ ۱۳۸، حدیث:۲۳۱۵

2 المستطرف، الباب الحادی والثمانون فی ذکر الموت......الخ، ۲/ ۴۷۷

ऐ नफ़्स क्या चाहता है ?

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम तीमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی अपने नफ़्स का मुहासबा करने का अन्दाज़ बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : एक मरतबा मैं ने येह तसव्वुर बांधा कि मैं जन्नत में हूं, वहां के फल खा रहा हूं और उस की नहरों से मशरूब पी रहा हूं। इस के बा'द मैं ने येह ख़याल जमाया कि मैं जहन्नम में हूं और थोहड़ (कांटेदार दरख़्त) खा रहा हूं और दोज़ख़ियों का पीप पी रहा हूं। इन तसव्वुरात के बा'द मैं ने अपने नफ़्स से पूछा : "तुझे किस चीज़ की ख़्वाहिश है ? जन्नत की या जहन्नम की ?" नफ़्स ने कहा : जन्नत की। तब मैं ने अपने नफ़्स से कहा : फ़िलहाल तुझे मोहलत (مُہْلَت) मिली हुई है। (या'नी ऐ नफ़्स ! अब तुझे खुद ही राह मुतअ़य्यन करनी है कि सुधर कर जन्नत में जाना है या बिगड़ कर दोज़ख़ में ! लिहाज़ा) इसी हिसाब से अ़मल कर।[1]

है यहां से तुझ को जाना एक दिन क़ब्र में होगा ठिकाना एक दिन
मुंह ख़ुदा को है दिखाना एक दिन अब न ग़फ़्लत में गंवाना एक दिन

एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 مکاشفۃ القلوب، الباب الثمانون فی بیان المحبۃ ومحاسبۃ النفس، ص۲۶۵ ملتقطاً

दुन्या किस लिये है ?

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने सब से आख़िरी ख़ुत़बे में इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें दुन्या इस लिये अ़त़ा फ़रमाई है कि तुम इस के ज़रीए़ आख़िरत की तय्यारी करो और इस लिये अ़त़ा नहीं फ़रमाई कि तुम इसी के हो कर रह जाओ। बेशक दुन्या फ़ानी और आख़िरत बाक़ी है। तुम्हें फ़ानी (दुन्या) कहीं बहका कर बाक़ी (आख़िरत) से ग़ाफ़िल न कर दे। बाक़ी रहने वाली को फ़ना हो जाने वाली पर तरजीह़ दो क्यूंकि दुन्या मुन्क़त़अ़ होने वाली है और बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ लौटना है। **अल्लाह** से डरो क्यूंकि उस का डर उस के अ़ज़ाब से (रोक और) ढाल और उस की बारगाह तक पहुंचने का ज़रीआ़ है।[1]

जहां में हैं इ़ब्रत के हर सू नुमूने मगर तुझ को अन्धा किया रंगो बू ने
कभी ग़ौर से भी येह देखा है तू ने जो आबाद थे वोह मकां अब हैं सू ने
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

مدینہ

1 شعب الایمان للبیہقی، الزھد وقصر الامل، اقوال السلف فی الدنیا وقصر الامل، ۳/ ۴۷۰

आज अ़मल का मौक़अ़ है

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने एक मरतबा कूफ़ा में ख़ुत़बा देते हुवे इरशाद फ़रमाया : ऐ लोगो ! बेशक तुम्हारे बारे में मुझे सब से ज़ियादा इस बात का ख़ौफ़ है कि कहीं तुम लम्बी लम्बी उम्मीदें न बांध बैठो और ख़्वाहिशात की पैरवी में न लग जाओ। याद रखो ! लम्बी उम्मीदें आख़िरत को भुला देती हैं और ख़बरदार ! नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी राहे ह़क़ से भटका देती है। ख़बरदार ! दुन्या अ़नक़रीब पीठ फेरने वाली और आख़िरत जल्द आने वाली है। आज अ़मल का दिन है, ह़िसाब का नहीं और कल ह़िसाब का दिन होगा, अ़मल का नहीं।[1]

कूच हां ऐ बे ख़बर होने को है कब तलक ग़फ़्लत सह़र होने को है
बांध ले तोशा सफ़र होने को है ख़त्म हर फ़र्दे बशर होने को है

एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़ानी ज़िन्दगी में अबदी ज़िन्दगी की तय्यारी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن के मज़्कूरा फ़रामीन से मा'लूम हुवा कि इस फ़ानी (दुन्यवी) ज़िन्दगी में उस अबदी (उख़रवी) ज़िन्दगी की भरपूर तय्यारी कर ली जाए

[1] شعب الایمان للبیہقی، الزھد و قصر الامل، اقوال السلف فی الدنیا و قصر الامل، ۳/ ۴۷۰

और कभी भी क़ब्रो ह़श्र की ज़िन्दगी को न भूला जाए बल्कि हर शख़्स को चाहिये कि हर लम्ह़ा अपना मुह़ासबा करता रहे, अगर कोई अपने अन्दर مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ किसी क़िस्म की बुराई पाए तो न सिर्फ़ इस से बल्कि अपने साबिक़ा तमाम गुनाहों से सच्ची तौबा कर के नेकियों की राह पर इस त़रह़ चलने लगे कि कभी बुराई की राह को पलट कर न देखे, वरना याद रखे ! मौत के बा'द हर एक को अपनी करनी का फल ज़रूर भुगतना है।

मौत आ कर ही रहेगी याद रख जान जा कर ही रहेगी याद रख
क़ब्र में मय्यित उतरनी है ज़रूर जैसी करनी वैसी भरनी है ज़रूर

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

काले बिच्छू

कोइटा के एक क़रीबी गाऊं में एक लावारिष क्लीन शैव (Clean shave) नौजवान मरा पाया गया लोगों ने मिल कर उस को दफ़्ना दिया। इतने में मर्ह़ूम के अ़ज़ीज़ ढूंडते हुवे आ पहुंचे और कहने लगे कि हम इस की लाश को निकाल कर ले जाएंगे और अपने गाऊं में दफ़्नाएंगे। लिहाज़ा क़ब्र दोबारा खोदी गई, जब चेहरे की त़रफ़ से सिल हटाई गई तो लोगों की चीख़ें निकल गईं ! कफ़न चेहरे से हटा हुवा था और क्लीन शैव नौजवान के चेहरे पर काले काले बिच्छूओं की काली काली दाढ़ी बनी हुई थी, घबरा कर जल्दी जल्दी सिल रखी, मिट्टी डाली और लोग भाग गए।[1]

1 ..... बयानाते अ़त्तारिय्या, ह़िस्सए अव्वल, स. 346

दिल हाए गुनाहों से बेज़ार नहीं होता मग़लूब शहा! नफ़्से बदकार नहीं होता
गो लाख करूं कोशिश इस्लाह़ नहीं होती पाकीज़ा गुनाहों से किरदार नहीं होता
येह सांस की माला बस अब टूटने वाली है ग़फ़्लत से मगर फिर भी बेदार नहीं होता
ऐ रब के ह़बीब आओ ऐ मेरे त़बीब आओ अच्छा येह गुनाहों का बीमार नहीं होता
शैत़ान मुसल्लत़ है अफ़्सोस किसी सूरत अब सब्र गुनाहों पर सरकार नहीं होता

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मौत से पहले मौत की तय्यारी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! मौत से पहले मौत की तय्यारी कर लीजिये ताकि जब क़ब्र में ह़बीबे ख़ुदा से या ह़श्र में ख़ुदाए जुल जलाल से मुलाक़ात हो तो किसी क़िस्म की शर्मिन्दगी और रुस्वाई का सामना न करना पड़े। बल्कि जब इस दुन्याए फ़ानी से हमारे कूच का वक़्त आए तो इस ह़सरत में मुब्तला न हों, ऐ काश! कुछ देर मोहलत मिल जाती तो नेक आ'माल बजा लाते। ह़ालांकि मन्क़ूल है: اَلْمَوْتُ جِسْرٌ يُوْصِلُ الْحَبِيْبَ اِلَى الْحَبِيْب या'नी मौत तो एक पुल है जो दोस्त को दोस्त तक पहुंचाता है।[1] और मरवी है कि एक अन्सारी सह़ाबी ने बारगाहे नबुव्वत में अ़र्ज़ की: या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कौन सा मोमिन सब से ज़ियादा अ़क़्लमन्द है? तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया: "मौत को ज़ियादा

1 فیض القدیر، ۳/ ۳۰۷، تحت الحدیث: ۳۲۵۷

याद करने वाले और मौत के बा'द की ज़िन्दगी के लिये बेहतरीन तय्यारी करने वाले लोग सब से ज़ियादा अक़्लमन्द हैं।[1]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम सब को मौत से पहले मौत की तय्यारी की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। बन्दए मोमिन के लिये ख़ौफ़े ख़ुदा और रजा (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से रह़मत की उम्मीद) दोनों होना ज़रूरी है। आज मुसलमान जहां दीगर बहुत सी बुराइयों का शिकार हैं एक बहुत बड़ी नादानी येह भी आ़म है कि **अल्लाह** तबारक व तआ़ला की रह़मत और उस की ने'मतों पर तो यक़ीन रखते हैं लेकिन **कमा ह़क़्क़ुहू** उस की नाराज़ी का ख़ौफ़ अपने दिलों में नहीं रखते और इस की वजह से गुनाहों पर दिलैर होते जा रहे हैं। अपनी इस्लाह़ और नफ़्स को गुनाहों से बाज़ रखने के लिये मौत का तसव्वुर बहुत मुफ़ीद है, इसी लिये औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام हर वक़्त मौत का तसव्वुर जमाए रखते और इस दारे फ़ानी को वाक़ेई आ़रिज़ी समझते थे। काश ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इन नेक बन्दों के सदक़े हमें भी मौत का तसव्वुर जमाए रखने की तौफ़ीक़ मिल जाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

अच्छी अच्छी निय्यतें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस से पहले कि मौत हमें आख़िरत के सफ़र पर रवाना करे, आइये राहे आख़िरत के मुसाफ़िर

[1] ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب ذکر الموت والاستعداد لہ، ۴/ ۴۹۶، حدیث: ۴۲۵۹

बनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लीजिये कि फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ या'नी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है ।(1)

- आज के बा'द मेरी कोई नमाज़ क़ज़ा नहीं होगी ।
- सफ़े अव्वल में जमाअ़त के साथ पांचों वक़्त नमाज़ पढ़ूंगा ।
- झूट, ग़ीबत, चुग़ली से बचता रहूंगा ।
- मां-बाप को नहीं सताऊंगा ।
- ह़राम रोज़ी नहीं कमाऊंगा ।
- सुन्नतों पर अ़मल करूंगा ।
- **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी से बचूंगा ।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मज़कूरा अच्छी अच्छी निय्यतों के इलावा भी हर नेक काम करने और बुराई से बचने की बे शुमार निय्यतें की जा सकती हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम सब को नमाज़ी बनाए, हमारे दिल से गुनाहों की सियाही दूर फ़रमाए और हमें मदनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनाए । मदनी क़ाफ़िलों की बरकत से जब हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के घर या'नी मस्जिद में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मेहमान बनेंगे तो यक़ीनन अपने रब की नाफ़रमानी के कामों से भी इतनी देर तक दूर रह कर अपने रब को राज़ी करने की कोशिश करेंगे, मदनी क़ाफ़िलों की बरकत से मदनी माह़ोल नसीब होगा और येह मदनी ज़ेह्न भी बनेगा कि मैं ने बहुत नमाज़ें क़ज़ा कर लीं, अब

मैं न सिर्फ़ ख़ुद नमाज़ पढ़ूंगा बल्कि दूसरों को भी नमाज़ की तरग़ीब दिला कर कम अज़ कम एक इस्लामी भाई को अपने साथ मस्जिद में लेता जाऊंगा। मैं ख़ुद भी नेकियां करूंगा और दूसरों को भी नेकी की दा'वत दूंगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मदनी इन्आ़मात

प्यारे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ पन्दरहवीं सदी की अ़ज़ीम इ़ल्मी व रूहानी शख़्सिय्यत, शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इस पुर फ़ितन दौर में नेक बनने के लिये हमें **मदनी इन्आ़मात** की सूरत में एक बेहतरीन जदवल अ़त़ा फ़रमाया है जिस के ज़रीए हम आसानी से अपने रोज़ मर्रा के मा'मूलात में रहते हुवे फ़राइज़ व वाजिबात की अदाएगी के साथ साथ नवाफ़िल व मुस्तह़ब्बात की भी बजा आवरी कर सकते हैं।

मदनी इन्आ़मात का रिसाला ह़ासिल कर के इस के मुत़ाबिक़ अ़मल और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए इस को पुर करने का मा'मूल बना लेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दीनो दुन्या की बे शुमार बरकात ह़ासिल होंगी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम सब को अ़मल की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

ماخذومراجع

نمبر شمار	کتاب	مصنف / مولف
1	قرآن مجید	کلام باری تعالیٰ مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
2	کنزالایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضاخان، متوفی ۱۳۴۰ھ، مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
3	خزائن العرفان	صدرالافاضل نعیم الدین مراد آبادی، متوفی ۱۳۶۷ھ، مکتبۃ المدینہ باب المدینہ (کراچی)
4	المسند	امام احمد بن محمد بن حنبل، متوفی ۲۴۱ھ دارالفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
5	صحیح البخاری	امام ابوعبداللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ، دارالکتب العلمیۃ
6	سنن ابن ماجہ	امام ابوعبداللہ محمد بن یزید ابن ماجہ، متوفی ۲۷۳ھ دارالمعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
7	سنن الترمذی	امام ابوعیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ دارالفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
8	موسوعۃ ابن ابی الدنیا	حافظ امام ابوبکر عبداللہ بن محمد قُرشی، متوفی ۲۸۱ھ مکتبۃ العصریہ بیروت ۱۴۲۶ھ
9	المعجم الکبیر	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ داراحیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۲ھ
10	حلیۃ الاولیاء	ابونعیم احمد بن عبداللہ اصفہانی شافعی، متوفی ۴۳۰ھ دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۹ھ
11	مرآۃ المناجیح	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ ضیاء القرآن پبلی کیشنز، مرکز الاولیاء لاہور
12	تنبیہ الغافلین	فقیہ ابواللیث نصر بن محمد سمرقندی، متوفی ۳۷۳ھ دارالکتاب العربی، بیروت ۱۴۲۰ھ
13	احیاء علوم الدین	امام ابوحامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ، دار صادر، بیروت
14	مکاشفۃ القلوب	امام ابوحامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ دارالکتب العلمیہ، بیروت
15	عیون الحکایات	امام عبدالرحمن بن علی ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ دارالکتب العلمیۃ ۱۴۲۴ھ
16	الروض الفائق	شعیب بن عبداللہ بن سعد، متوفی ۸۱۰ھ داراحیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۲ھ
17	المستطرف	شہاب الدین محمد بن ابی احمد ابی الفتح، متوفّٰی ۸۵۰ھ دار الفکر بیروت ۱۴۱۹ھ
18	الزھد و قصر الامل	الشیخ اسعد محمد سعید الصاغرجی دارالکلم الطیب ۱۴۲۲ھ
19	اتحاف السادۃ المتقین	سید محمد بن محمد حسینی زبیدی، متوفی ۱۲۰۵ھ، دارالکتب العلمیہ، بیروت
20	بیانات عطاریہ	علامہ مولانا محمد الیاس عطار قادری، مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	तसव्वुरे मौत का त़रीक़ा	27
क़ब्र का ख़ौफ़नाक मन्ज़र	1	हमारे अस्लाफ़ और मौत का तसव्वुर	32
अ़ज़ाबे क़ब्र ज़ाहिर होने की ह़िक्मत	5	आख़िरत की पहली मन्ज़िल	32
इ़ब्रत के मदनी फूल	6	उस का ह़ाल क्या होगा !	33
क़ब्र की पुकार	7	ऐ नफ़्स क्या चाहता है ?	34
क़ब्र सांपों से भर गई	9	दुन्या किस लिये है ?	35
मुसलमान और काफ़िर की मौत के अह़्वाल	10	आज अ़मल का मौक़अ़ है	36
अ़ज़ाबे क़ब्र ह़क़ है	15	फ़ानी ज़िन्दगी में अबदी ज़िन्दगी की तय्यारी	36
ह़दीष की शर्ह़	17	काले बिच्छू	37
हमारा क्या बनेगा ?	18	मौत से पहले मौत की तय्यारी	38
येह इ़ब्रत की जा है	21	अच्छी अच्छी निय्यतें	40
मलकुल मौत का ए'लान	21	मदनी इन्आ़मात	41
इ़ब्रतनाक अश्आ़र	23	माख़ज़ो मराजेअ़	42
आबादी किधर है ?	26	फ़ेहरिस्त	43

दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के निगरान ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद इमरान अ़त्तारी سلّمه الباری के तह़रीरी बयानात

त़ब्अ़ शुदा

﴾1﴿ फ़ैज़ाने मुर्शिद (कुल सफ़ह़ात : 32)	﴾14﴿ जन्नत की तय्यारी (कुल सफ़ह़ात : 106)
﴾2﴿ एह़सासे ज़िम्मेदारी (कुल सफ़ह़ात : 48)	﴾15﴿ वक़्फ़े मदीना (कुल सफ़ह़ात : 74)
﴾3﴿ मदनी कामों की तक़्सीम (कुल सफ़ह़ात : 22)	﴾16﴿ मदनी कामों की तक़्सीम के तक़ाज़े (कुल सफ़ह़ात : 52)
﴾4﴿ मदनी मश्वरे की अहम्मिय्यत (कुल सफ़ह़ात : 32)	﴾17﴿ सूद और उस का इलाज (कुल सफ़ह़ात : 92)
﴾5﴿ सीरते सय्यिदुनाअबुहुरैरा رضی اللہ تعالیٰ عنہ (कुल सफ़ह़ात : 75)	﴾18﴿ प्यारे मुर्शिद (कुल सफ़ह़ात : 48)
﴾6﴿ बुराइयों की मां (कुल सफ़ह़ात : 112)	﴾19﴿ फ़ैसला करने के मदनी फूल
﴾7﴿ ग़ैरत मन्द शोहर	﴾20﴿ जामेअ़ शराइत पीर (कुल सफ़ह़ात : 88)
﴾8﴿ सह़ाबी की इनफ़िरादी कोशिश	﴾21﴿ कामिल मुरीद (कुल सफ़ह़ात : 48)
﴾9﴿ पीर पर ए'तिराज़ मन्अ़ है	﴾22﴿ अमीरे अहले सुन्नत की दीनी ख़िदमात (कुल सफ़ह़ात : 480)
﴾10﴿ जन्नत का रास्ता (कुल सफ़ह़ात : 56)	﴾23﴿ हमें क्या हो गया है ? (कुल सफ़ह़ात : 116)
﴾11﴿ मक़्सदे ह़यात (कुल सफ़ह़ात : 60)	﴾24﴿ मौत का तसव्वुर (कुल सफ़ह़ात : 44)
﴾12﴿ सदक़े का इन्आ़म (कुल सफ़ह़ात : 60)	﴾25﴿ बेटी की परवरिश (कुल सफ़ह़ात : 72)
﴾13﴿ एक आंख वाला आदमी (कुल सफ़ह़ात : 60)	(26) गुनाहों की नुहूसत

ज़ेरे तरतीब

(1) एक ज़माना ऐसा आएगा	(2) मरज़ से क़ब्र तक

याद दाश्त

(दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी ।)

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माहोल में ब कषरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है, आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते षवाब सुन्नतों की तर्बिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

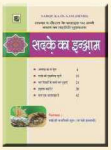

-: मक्तबतुल मदीना की शाख़ें :-

❁... अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, तीकोनी बाग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अह़मदाबाद-1, फ़ोन : 9327168200

❁... मुम्बई :- 19 - 20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई, फ़ोन : 022-23454429

❁... नागपूर :- सैफ़ी नगर रोड़, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, मोमिन पूरा, नागपूर फ़ोन : 9326310099

❁... अजमेर :- 19 / 216 फ़लाहे दारैन मस्जिद के क़रीब, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, फ़ोन : (0145) 2629385

❁... हुबली :- A.J मुधल कोम्पलेक्स, A.J मुधल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक - फ़ोन : 08363244860

❁... हैदराबाद :- मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पूरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

❁... बनारस :- अल्लू की मस्जिद के पास, अम्बा शाह की तकया, मदन पूरा, बनारस, फ़ोन : 09369023101

MAKTABATUL MADINA

421, URDU MARKET, MATYA MAHAL, JAMA MASJID
DELHI - 110006, PH : 011-23284560
email : maktabadelhi@gmail.com
web : www.dawateislami.net

MAKTABA TUL MADINAH
MC 1286